कोपनहेगन के बाद

मिस यूरोप : ग्लोबल वार्मिंग से लोग इतना घबरा क्यों रहे हैं ? वार्मिंग यानि की गरमाहट ! This should be a pleasant feeling. हम ठंडे मुल्कों के लिए गरमाह ईश्वर का वरदान है। अगर पिछले 100 वर्षों में धरती का औसत तापमान , एवरेज टैंप्रचर 0. 75 डिगरी सेलसियस बढ़ा है तो इस पर इतनी हाय तोबा क्यों ? Just think, average temperature has gone up by just 0.75 degree Celsius, not even 1 degree Celsius !

मिस अफ्रीका : किसी के घर में आग लगे और उसका पडोसी उसमें हाथ सेक कर कहे कि गरमाहट का सुखद अहसास हो रहा है। लगभग एसी ही बात मिस यूरोप कर रही हैं। दक्षिण अफ्रीका में पानी का घोर संकट हो चला है। अन्य मुल्कों में भी जल संकट लगातार बढ़ता जारहा है। और आप कहते हैं कि ग्लोबल वार्मिंग कोई खास मुद्दा नहीं है !

मिस्टर चायना : इन गिने चुने चन्द विकसित देशों को शर्म आनी चाहिए। ग्लोबल वार्मिंग इन्हीं मुल्कों की अवैध संतान है। Global warming is out and out their baby, their illegitimate baby !

मिस्टर अमरीका : Mind your language China! वातारवरण में सबसे ज्यादा कार्बनडाइआक्साइड किस मुल्क से आ रही है? तुम्हारे मुल्क से, चीन से! और तुम कहते हो कि वातावरण को हम विकसित देश प्रदूषित कर रहे हैं। You better Check your facts and figures!

मिस्टर चायना : मानता हूं आज चीन विश्व का नम्बर एक सीओटू एमिटर, कार्बनडाइआक्साइड उत्सर्जक है। मगर पिछले 3 या 4 महीने से ही है। इससे पहले नम्बर एक पर कौन था? आप थे मि. अमरीका, आप! भला हो वैश्विक मंदी का जिसने आपकी औद्योगिक रफ्तार रोक दी है। वरना आज भी आप ही विश्व के नम्बर एक पर्यावरण प्रदूषक माने जाते।

मिस्टर अमरीका : Let us talk of today's position. आज विश्व के सबसे बडे सीओटू एमीटर आप हैं। लिहाज़ा इस पर नियंत्रण करने की सबसे बडी ज़िम्मेदारी भी आप ही की बनती है।

मिस्टर चायना : वाह–वाह! दो सदियों के प्रदूषण के लिए आपको माफी ?! और दो महीने के प्रदूषण के लिए चीन को फांसी! क्या यही कहना चाहते हैं आप?

मिस्टर अमरीका : नहीं।

मिस यूरोप : चीनी भाई हम तो सिर्फ यह कहना चाहते हैं कि दो सदियों के औद्योगिक विकास का लाभ केवल पश्चिम के देशों ने नहीं उठाया है, बल्कि विश्व के सभी देशों ने उठाया है। इस विकास से उपजे प्रदूषण से ही ग्लोबल वार्मिंग हुई ह।

मिस्टर अमरीका : इसलिए इसका ख़ामियाजा भी समूचे विश्व को ही उठाना होगा। हम सभी को मिलकर ग्रीन हाऊस गैसों के एमिशन पर, उत्सर्जन पर, रोक लगानी होगी।

मिस अफ्रीका : मेरे विचार से ज्यादा जिम्मेदारी विकसित देशों की बनती है।

मिस्टर चायना : ठीक कहा आपने। विकासशील देश अगर अपना सीओटू एमीशन कम करेंगे तो उनकी विकास दर प्रभावित होगी। गरीबी भुखमरी एवं बेरोज़गारी की समस्याएं हल नहीं होंगी।

विकसित देश साधन संपन्न हैं। सीओटू एमिशन पर लगाम देने से यदि उनकी विकास दर कुछ घट भी गई तो इसे सहन कर पाने मं वे सक्षम हैं।

मिस्टर भारत : अपनी ढ़पली अपना राग आलापने से काम नहीं चलेगा। ग्लोबल वार्मिंग किसी को भी नही बख्शेगी। ना ठंडे मुल्कों को, ना गर्म मुल्कों को। ना गरीब देशों को ना अमीर देशों को। मौसम चक्र बदल रहे हैं। ग्लेशियर पिंघल रहे हैं। सूखे एवं बाढ की स्थिति दिन ब दिन विकट होती जारही है।

मिस यूरोप : मिस्टर भारत मुझे आपसे सहानुभूति है। मगर कुछ वैज्ञानिक कहते हैं कि सीओटू एमीशन पर लगाम लगा देने से भी समस्या हल नहीं होगी। वायुमंडल में कार्बनडाइआक्साइड की वर्तमान मात्रा वातावरण में यूंही, जस की तस बनी रहेगी। इतना ही नहीं, वे ग्रीन हाऊस गैसों को धरती के लिए आवश्यक भी बताते हैं। कहते हैं कि यदि ये गसें ना हों तो पृथ्वी का तापमान माईनस 18 डिगरी सेंटीग्रेड हो, यानि की बर्फ के तापमान से भी 18 डिगरी कम। Just imagine, life would just not be possible on earth.

मिस्टर भारत : वैज्ञानिक तो यह भी कहते हैं कि इस शताब्दी के अंत तक भी धरती का तापमान बढ़ता ही जाएगा। यदि इसे ना रोका गया तो भी Life on earth would be in great danger.

समुद्र का पानी तटीय इलाकों को निगल जाएगा। वायुमंडल में आद्रता यानि की humidity, इतनी बढ़ जाएगी कि इससे बचने के लिए हमें घर–दफ्तरों में विशेष उपकरणों की व्यवस्था करनी पडेगी। जीव–प्राणियों की अनेक प्रजातियां इन विषम परिस्थितियों में दम तोड देंगी, विलुप्त हो जाएंगी। समूचा जीवन–चक उलट–पलट हो जाएगा। हालात लगभग वैस ही हो जाएंगे जैसे, हमारी पौराणिक कथाओं के अनुसार, 'समुद्र–मंथन' के दौरान हुए थे।

मि. यूरोप : समुद्र–मंथन क्या है? Please tell us about this story.

मिस्टर भारत : To cut the long story short, churning the ocean had become a necessity in distant past. जब समुद्र का मंथन हुआ उसमें से अनेक बहुमूल्य वस्तुएं प्राप्त हुईं। ठीक एसे ही जैसे औद्योगिक कांति से आज के विश्व में सुख सम्पन्नता के अनेक साधन उपलब्ध हुए हैं। मगर इन सब के साथ–साथ ' हलाहल' भी मिला। हलाहल अर्थात ज़हर, Poison. ठीक ऐसे ही जैसे आधुनिक विकास के साथ साथ हमें ग्लोबल वार्मिंग मिल रही है।

मिस यूरोप : Wow! What happened then?

मिस्टर भारत : उस हलाहल से, ज़हर से, हाहाकार मच गया था। समूची सृष्टि विषाक्त हो कर नष्ट हो सकती थी। तब भगवान शंकर ने इस ज़हर का सामना किया और संसार की रक्षा की।

मि. अमरीका : कैसे की?

मि. भारत : हलाहल को पी कर।

मि. अमरीका : And he didn't die?!

मि. भारत : No, because he held that poison only to his neck region. ज़हर के असर से उनके गले का रंग नीला पड गया। और वे नीलकंठ कहलाए। इस प्रकार शंकर भगवान ने हलाहल को निष्प्रभावी किया और संसार की रक्षा की।

मिस यूरोप : What a great man, sorry, I mean God!

मि. भारत : हां, शंकर भगवान दया के सागर हैं। मगर जब वे कोधित होते हैं तो सृष्टि का विनाश भी कर देते हैं।

मि. अमरीका : Oh really?! And when does he loose his cool?

मि. भारत : When he finds that POISON is again on prowl and nobody is coming forward to contain it. दोस्तों, ग्लोबल वार्मिंग एक नया हलाहल है। इसे काबू में करना हमारी सामूहिक ज़िम्मेदारी है।

मि. अमरीका : We may be a materially advanced nation, but we are also God fearing. May Lord Shanker have mercy on us.

मिस. यूरोप : We are also god-fearing country. We should try to contain global warming with the same spirit as Lord Shankara displayed in containing HALAHAL-THE POISON.

मि. भारत : हमारी संस्कृति में आदमी को भगवान का ही रुप, भगवान का ही विस्तार माना गया है। जो भी व्यक्ति समाज अथवा पर्यावरण में फैले ज़हर से लोहा लेता है, उसे कम करने का प्रयास करता है, वह भगवान शंकर का ही रुप होता है। वही सत्य है, शिव है, सुंदर है।

मि. अमरोका : मि. भारत, आपने मेरी आंखें खोल दी हैं। मुझे अफसोस है कि 'कोपेनहेगन समिट' में हम ग्लोबल वार्मिंग पर कोई आम सहमति नहीं बना पाए। मगर मैं आश्वासन देता हूं कि अगले जलवायु–परिवर्तन सम्मेलन में, जो मेक्सिको में होगा, मैं शंकर भगवान को नहीं भूलूंगा।

सभी मिल कर : बोलो शंकर भगवान की ! जय !!

बोलो भोले भंडारी की ! जय !!

लेखक एवं निर्देशक – डॉ. बीरसिंह

जन संपर्क अधिकारी, श्रीधर यूनिवर्सिटी

पिलानी–चिडावा रोड, पिलानी, राजस्थान

पात्र परिचयः

मिस यूरोप – डॉ. मोनिका गोस्वामी

मि. अमरीका – अतुल रूथला

मि. चायना – सूर्यप्रकाश श्रीवास्तव

मि. भारत – सचिन शर्मा

मिस अफ्रीका – अंजली त्रिपाठी